आज़ादी का
अमृत महोत्सव

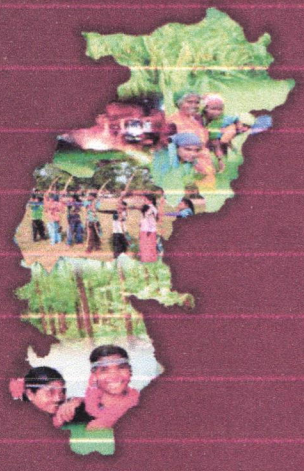

छत्तीसगढ़ी संजोही

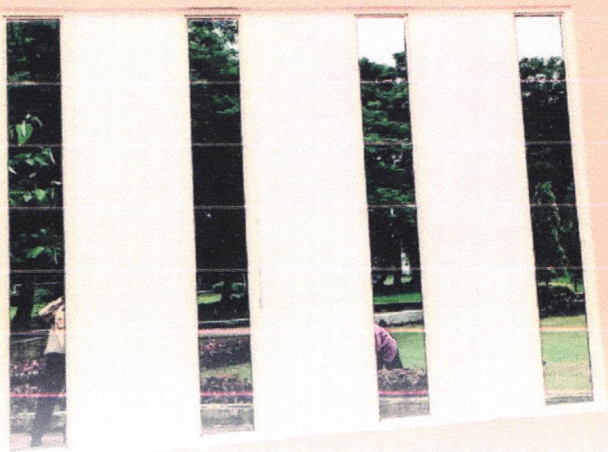

DR. C.V. RAMAN UNIVERSITY

Chhattisgarh, Bilaspur | AN AISECT GROUP UNIVERSITY

Approved by : PCI | AICTE | NCTE | BCI | Member of : AIU | Recognized by : UGC | A NAAC Accredited University

Dr. C.V. Raman University Kota, Bilaspur (C.G.) Registrar

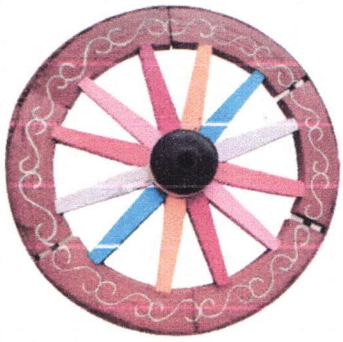

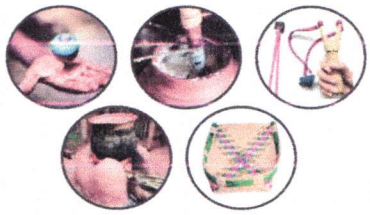

छत्तीसगढ़ी संजोही

प्रस्तावना

डॉ.सी.वी.रामन् विश्वविद्यालय के द्वारा छत्तीसगढ़ की कला, संस्कृति एवं छत्तीसगढ़ी जीवन शैली एवं प्रतीक चिन्हों को सरंक्षित एवं संवर्धित करने के उद्देश्य से विश्वविद्यालय में छत्तीसगढ़ी कला एवं संस्कृति केंद्र एवं छत्तीसगढ़ी संजोही की स्थापना की गई। छत्तीसगढ़ी कला एवं संस्कृति केंद्र में छत्तीसगढ़ी गायन, कला, संगीत, वादन,नृत्य, ग्रामीण प्रौद्योगिकी के साधन, सहित सभी विषयों पर दुर्लभ वस्तुओं का संग्रह करते हुए विश्वविद्यालय में छत्तीसगढ़ी संजोही की स्थापना भी की गई। छत्तीसगढ़ी संजोही का उद्देश्य है कि भावी पीढ़ी को छत्तीसगढ़ की कला, संस्कृति एवं छत्तीसगढ़ी जीवन शैली के मूल स्वरुप से जोड़ते हुए यह जानकारी उन्हें वास्तविक रुप में ही हस्तांतरित की जाए। छत्तीसगढ़ के प्रतीक चिन्हों को संरक्षित किया जाए। इस कल्पना को साकार रुप देने के लिए विश्वविद्यालय के शिक्षकों व कर्मचारियों, विद्यार्थियों के साथ उनके अभिभावकों ने अमूल्य सहयोग दिया है। यह दोनों केंद्र ज्ञान केंद्र के रुप मे कार्य कर रहे हैं। छत्तीसगढ़ी संजोही छत्तीसगढ़ी कला, संस्कृति एवं जीवन शैली के क्षेत्र में शोध करने वाले विद्यार्थियों एवं प्रतियोगी परीक्षा में शामिल होने वाले विद्यार्थियों के लिए सहायक होगा। वास्तव में आत्म निर्भर भारत की कल्पना ग्रामीण जीवन शैली की है, क्योंकि गांव का जीवन आत्मनिर्भर जीवन है। छत्तीसगढ़ी ग्रामीण प्रौद्योगिकी के परंपरागत शैली को जीवंत रुप में प्रदर्शित करने का प्रयास छत्तीसगढ़ी संजोही में किया गया है। रोजमर्रा के कार्यों में समाज की आत्म निर्भरता एवं उसकी कलात्मक अभिवक्ति को संजोही में प्रदर्शित किया गया है। छत्तीसगढ़ में गांव के परंपरागत खेलों की खेल साम्रगी, महिलाओं के श्रृगांर एवं परिधान, परंपरागत ज्ञान कला एवं जीवन शैली को जीवंत रुप में दिखाया गया है। छत्तीसगढ़ी संजोही में सभी सामानों का दुर्लभ संकलन किया गया है। खेती, किसानी, खेल, खाद्य प्रसंस्करण, संस्कारों के समय उपयोग होने वाली वस्तुएं, मान्यताओं के अनुसार सामान, धर्म, परंपरा, आवश्यकता, अनिवार्यता एवं जीवन शैली से जुड़ी सभी वस्तुओं का दुर्लभ संकलन है। छत्तीसगढ़ी परंपरा ज्ञान, कला संस्कृति एवं इसके प्रतीक चिन्हों को संरक्षित कर इस पांरपरिक ज्ञान को भावी पीढ़ी को मूल रुप में हस्तांतरित करने के उद्देश्य से छत्तीसगढ़ी संजोही स्थापित है। यहां रोजमर्रा के कार्यों में समाज की आत्म निर्भरता एवं उसकी कलात्मक अभिव्यक्ति को संजोही में प्रदर्शित किया गया है। यह केंद्र एक ज्ञान केंद्र के रुप में कार्य करेगा एवं दिन प्रतिदिन सतत् रुप से समृद्ध होता रहेगा।

संजोही

डॉ. सी. वी. रामन् विश्वविद्यालय के छत्तीसगढ़ी संजोही कक्ष की परिकल्पना और उसे साकार करने के पीछे यही मंशा है कि छात्र-छात्राएं शिक्षक और आगंतुक अतिथि छत्तीसगढ़ के ग्रामीण जनजीवन से एक ही नजर में रुबरु हो सके। संजोही अर्थात सहेजना, छत्तीसगढ़ी संजोही में छत्तीसगढ़ के ग्रामीणों जीवन शैली उनकी परम्परा एवं संस्कृति की उन तमाम वस्तुओं को उन संसाधनों को, जो उनकी दैनिक दिनचर्या, खेती किसानी, तीज त्योहार पूजा आराधना, खेलकूद रस्मो-रिवाज और उनकी परंपरा व संस्कृति के अभिन्न अंग है उसे जीवंत रुप में प्रदर्शित करने का कार्य किया गया है। छत्तीसगढ़ी संजोही के माध्यम से विश्वविद्यालय के विद्यार्थी और शहरी समाज का लगाव- जुड़ाव ग्रामीण अंचलों से सतत् बना रहेगा। संजोही कक्ष में ग्रामीण जीवन शैली के उन सभी सामग्री और संसाधनों को करीने से न सिर्फ सजा कर रखा गया बल्कि एक-एक वस्तुओं की विस्तृत जानकारी मौके पर ही मुहैया कराई जा रही है उनका दस्तावेजीकरण कर उन्हे प्रदर्शित किया गया है।जिससे आगंतुकों को इस बात की जानकारी हो जाती है कि ग्रामीणों के पहले का दौर और मौजूदा जीवन शैली कितनी भिन्न है व पुरातन शैली समृद्ध और सरल है। सामाजिक, धार्मिक और आर्थिक रुप से सामूहिकता और आत्म निर्भरता के क्या मायने है, व्यवसाय पर ज्ञान कौशल का पैत्रिक हस्तांतरण और आपसी सामंजस्य के बीच ग्रामीण अंचल के लोग किस तरह से खुशहाल जीवन व्यतीत करते हैं। नई पीढ़ी को इस पुरातन ज्ञान परम्परा से जोड़ने की मंशा और हमारी इस परिकल्पना के पीछे दूसरा महत्वपूर्ण पहलू यह भी है कि पृथक छत्तीसगढ़ राज्य निर्माणके पश्चात छत्तीसगढ़ी को राजभाषा का दर्जा मिला ऐसे में विश्वविद्यालय की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी बनती है कि दैनिक व्यवहार, शिक्षा और राज्य के कामकाज में छत्तीसगढ़ी भाषा को समृद्ध बनाये व इससे नई पीढ़ी को अवगत करायें। विश्वविद्यालय का छत्तीसगढ़ी संजोही छत्तीसगढ़ राज्य प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी कर रहे है विद्यार्थियों के लिए किसी सौगात से कम नहीं है। छत्तीसगढ़ी संजोही, छत्तीसगढ़ी लोक कला संस्कृति परंपरा के शोधकर्ताओं के लिए महत्वपूर्ण प्रयोगशाला एवं स्रोत केंद्र है। छत्तीसगढ़ी संजोही कक्ष हमारी नई पीढ़ी को ग्रामीण जीवन शैली और परंपरा के करीब लाता है जिनसे वो दूर होते जा रहे हैं।

छत्तीसगढ़ी संजोही यहीं दर्शाता है कि ग्रामीण जनों को स्वचालित संसाधनों पर नहीं बल्कि स्वनिर्मित संसाधनों पर अटूट भरोसा है श्रम साध्य खानपान जिसे वे तैयार करते हैं वह पूर्णतः प्राकृतिक और पौष्टिक होता है। ग्रामीणों को जतवा (चक्की) के आटा ही स्वादिष्ट लगते हैं सिलौटी में पीसी चटनी और रोटी खा कर उन्हें भरपूर संतुष्टि मिलती है ढेंकी में कूट कर तैयार किया गया चावल उन्हें रुचता है।

ग्रामीणों के बीच एक बड़ी अच्छी विशिष्ट परंपरा है, परस्पर सहयोग व आत्मनिर्भरता। ग्रामीणों के घर का चुल्हा भी घर के सदस्यों की संख्या को इंगित करता है एक मुंह वाला चुल्हा एकाउल्हा चूल्हा दोमुह वाला दोकौलहा चुल्हा तीन मुहवाला चूल्हा तीन कोना चूल्हा इन चुल्हों में परिवार के सदस्यों की संख्या के आधार पर एक या तीन हान्डियों में एक साथ रसोई तैयार की जाती है चूल्हे की बनावट और सुंदरता संजोही पहुंचने वालों को उत्साहित करती है। यहाँ पर हमने ग्रामीणों के उन चुल्हो को प्रदर्शन के लिए रखा है।

वर्षा ऋतु, ग्रीष्म ऋतु और शीत ऋतु के प्रंड तासीर से ग्रामीण बिल्कुल भी भयभीत नहीं होते बल्कि सभी मौसम में प्रकृति के करीब रहकर उसे गहराई के साथ महसूस करते हैं। मौसम की मार झेलने के लिए उन्होंने अपने लिए अनेक प्राकृतिक संसाधन विकसित किये है। गोरसी, खुमरी और पेड़ की छाया ग्रामीणों का प्रमुख आधार है। शीत ऋतु में ग्रामीण गोरसी का भरपूर भरपूर उपयोग करते हैं। बांस की चौड़ी पत्तीयों से बनी खुमरी जिसे ग्रामीणों का छाता कहा जा सकता है। इस माध्यम से घनघोर वर्षा भी ग्रामीणों के मनोबल को तोड़ नहीं पाती। बड़े ही सहज ढंग से कोई भी ग्रामीण खुमरी को सिर में बाध कर अपने कामकाज का निपटारा करने घर से निकल पड़ता है। संजोही कक्ष में हमने गोरसी और खुमरी को

Dr. C.V. Raman University
Registrar
Kargi Road, Kota, Bilaspur (C.G.)

प्रदर्शन के लिए रखा है। ग्रामीणों की जीवन शैली को दर्शाता हमारा संजोही कक्ष जिसे हम नायाब कह सकते हैं। ग्रामीणों के रस्मों रिवाज तीज त्यौहार जो पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होती चली आ रही है, यह परंपरा ग्रामीणों को प्रकृति से प्रेम करना सिखाती है जो उनकी पुरखौती देन है। छत्तीसगढ़ में अक्षय तृतीया यानि आखातीज या अक्ति पर्व बैसाख शुक्ल पक्ष तृतीया को मनाई जाती है। अक्ति की तिथि विवाह के लिए बहुत अच्छी मुहूर्त मानी जाती है। खेती किसानी गतिविधियां प्रारंभ होने का संकेत देता है। किसान रोपित किए जाने वाले बीजों (बिजहा) मखना, रखिया, लौकी, तरोई, नार (बेल वाले) सब्जियों का रोपण भी इसी दिन किया जाता है। रोपण से पहले ग्रामीण बीजों का भोग अपने इष्ट देव को लगाते है। इस अवसर पर ग्रामीण जन पारंपरिक विधि से वर्षा का अनुमान भी लगाते है। आखा तीज तिहार से ननिहाल गृहस्थ के रस्मों रिवाज से वाकिफ होते हैं। जहां गृहस्थ जीवन की शिक्षा लेने अक्ति के दिन बच्चे अपने मिट्टी से बने गुड्डे-गुड़ियाँ अर्थात पुतरा पुतरी का ब्याह रचाते हैं। बिना लग्न देखे इस दिन शादियां होती है। वर पक्ष को विवाह की झाँपी, मरसा, मटकी कन्या पक्ष की ओर से उपहार में मिलती है, जिसमें सहेज कर रखे पकवानों को पुरे गाँव के लोग मिल बाट कर खाते हैं और इस तरह गाँव में हुए विवाह को याद में संजो कर रखते हैं विवाह परंपरा के सभी सामानों कलश, करया मगरोहन, पाटा, मड़वा को संजोही में बड़े ही आकर्षक ढंग से सजाया गया है।

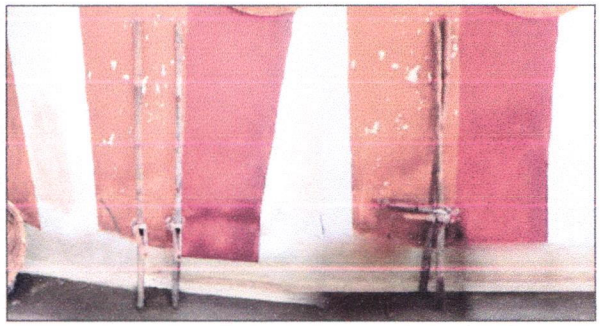

हरेली यह मुख्य रूप से किसानों का पर्व है। यह पर्व श्रावण मास की अमावस्या को मनाया जाता है। यह छत्तीसगढ़ अंचल में प्रथम पर्व के रुप में मनाया जाता है। यह हरियाली के उल्लास का पर्व है। इस पर्व में धान की बुवाई के बाद श्रावण मास की अमावस्या को सभी कृषि (हल, कुदाल, फावड़ा, कुल्हाड़ी) उपकरणों की पूजा की जाती है। इस पर्व को किसान फसल की अच्छी उपज एवं शक्ति शाली बनाने को मानते है। इस दिन बच्चे बांस की गेड़ी बनाकर घूमते एवं नाचते कूदते हैं। इस दिन जादू टोने की भी मान्यता है। इस दिन बैगा जनजाति के लोगों द्वारा फसल को रोग मुक्त करने के लिए ग्राम देवी देवताओं की पूजा पाठ की जाती है। विभिन्न प्रकार के रोगों से लड़ने के लिए घर के बाहर नीम की पत्तियों को लगाते है। इस पर्व में नारियल फेक प्रतियोगिता आयोजित किया जाता हैं। अपने पशुधन को निरोगी रखने के लिए अरंडी के पत्ते को गुड़ या आटे के साथ मिलाकर खिलाते हैं।

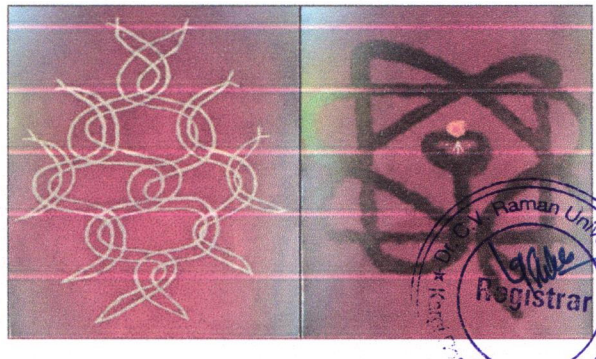

नाग पंचमी इस पर्व श्रावण शुक्ल पक्ष के पंचमी तिथि के दिन मनाई जाती है। इस पर्व के अवसर गोबर से नाग देवता के चित्र दीवार पर उकेर कर उसकी पूजा की जाती है साथ ही गांव-गांव मे कुश्ती खेल आयोजित की जाती है।

Dr. C.V. Raman University Registrar

भोजली यह पर्व मित्रता एवं प्रेम का अमूतपूर्ण पर्व है। रक्षा बंधन के दूसरे दिन भाद्र मास कृष्ण पक्ष प्रतिपदा में मनाया जाता है। इस दिन लगभग एक सप्ताह पूर्व बोए गए जौ, गेहूं आदि के पौधे रुपी भोजली का विसर्जन गांव की सभी कुंवारी कन्याओं के द्वारा भोजली विसर्जन किया जाता है। भोजली विसर्जन के लिए सभी कन्याएं एक साथ कतार से भोजली विसर्जन करती है। भोजली विसर्जन के बाद उस भोजली में से गेहूं के तिनको को सब एक दूसरे के कान में खोचते है और एक दूसरे मित्रता करते हैं। इस अवसर पर भोजली के गीत गाए जाते हैं। ओ देवी गंगा, लहर तुरंगा, भोजली पर्व का प्रसिद्ध गीत है। असल में गेहूं से निकला हुआ पौधा होता है, जिसे भोजली को देवी का रुप मानते हैं। भोजली बोने के लिए सबसे पहले कुम्हार के घर से खाद-मिट्टी लाई जाती है। खाद-मिट्टी कुम्हार द्वारा पकाए जाने वाले मटके और दीए से बचे "राख" को कहा जाता है। भोजली पर्व का यह नियम है कि खाद-मिट्टी कुम्हार के घर से ही लाया जाए। चुरकी और टुकनी (टोकरी) इसके बाद महतो के घर से चुरकी और टुकनी (टोकरी) लाई जाती है। महतो गाँव या समाज के सबसे वृद्ध और सम्मानित व्यक्ति होते हैं। इसके बाद राजा के घर से गेहूं लाया जाता है। राजा बैगा को कहते हैं, जो गोंड़ समुदाय से होते हैं। बैगा नौ दिनों तक भोजली के रुप में देवी-देवताओं की पूजा और प्रार्थना करते हैं। ऐसी मान्यता है कि भोजली के नौ दिनों तक पूजा करने से देवी-देवता गाँव की रक्षा करेंगे।

पोला यह पर्व भाद्र मास में अमावस्या के दिन मनाया जाता है। इस पर्व के दिन मिट्टी की बैलों की पूजा की जाती है। पूजा की इस दिन बैल दौड़ प्रतियोगिता भी आयोजित को जाती हैं। स्वादिष्ट व्यंजन जैसे ठेठरी, खुरमी आदि बनाते है। इस दिन बच्चे मिट्टी के बैलो को सजाकर उसकी पूजा अर्चना करते है तथा उससे खेलते है। और लड़कियो को मिट्टी के बने बर्तन (खिलौने) दिए जाते है। यह पर्व कृषि कार्य में संलग्न बैलों के प्रति कृतज्ञता का पर्व है। बैलों को धोकर खूब सजाया जाता है। इसके प्रतीक चिन्हों के रुप में नदिया बैला पूजा की जाती है। बैल जोड़ी में संग्रहालय में प्रदर्शित है।

गौरी-गौरा विवाह यह लोक पर्व छत्तीसगढ़ के लोक जीवन में सामाजिक समरसता, समन्वय, और भाईचारे को प्रगाढ़ करता है। महिलायें मिट्टी के सुवा को टोकनी में रखकर घरघर घुमकर सुवा नृत्य करती हैं। सुवा नृत्य-गीत में नारी जीवन के सुख-दुख और हर्ष विषाद की अभिव्यक्ति होती है। नारियाँ अपने भावों को मुखरित कर सुवा के माध्यम से लोक समाज को संदेश भेजती है। इस सुवा नृत्य से प्राप्त चावल और राशि गौरा-गौरी के विवाह में खर्च के निमित्त प्राप्त जनसहयोग का अनुकरणीय रुप है। महिलाएं गोल घेरा बनाकर हाथ की ताली बजाकर सुवा नृत्य करती है और गाती है तरि हरि ना ना मोर न नरि नाना। इस तोते को संग्रहालय के रुप में प्रदर्शित किया गया है।

Dr. C.V. Raman University, Kargi Road, Kota, Bilaspur (C.G.) Registrar

माघी मेला छत्तीसगढ़ राज्य निर्माण के पश्चात् मेले ने न सिर्फ अपना पुराना आकार फिर से पाया है, बल्कि इसके स्वरुप और आकार में खासी बढ़ोतरी हुई है। माघ-पूर्णिमा पर मेले का केन्द्र राजिम होता है, भव्य मेले का विस्तार पंचक्रोशी क्षेत्र में पटेवा (पटेश्वर), कोपरा (कोपेश्वर), फिंगेश्वर कारण मेले का माहौल शिवरात्रि तक बना रहता है। मेले में ग्रामीण अपने साल भर की खरीदारी करते हैं युवतियां अपने पारंपरिक गहने खरीदते हैं बच्चे परंपरागत खिलौने लेते हैं इस पारंपरिक गहनों व खिलौनों को संग्रहालय में प्रदर्शित किया गया है। संख्या की दृष्टि से राज्य के विशाल मेलों में से एक जगदलपुर का दशहरा मेला है। इसके अतिरिक्त चपका, बस्तर की प्रतिष्ठा बड़े मेले के रुप में है। शिवरीनारायण - खरौद का मेला भी माघ- पूर्णिमा से आरंभ होकर महाशिवरात्रि तक चलता है।

यहाँ पर हमने गाड़ा (बैंल गाड़ी / भैसा गाड़ी) का भी उल्लेख किया हैं यह प्राचीन समय में यातायात का प्रमुख साधन हुआ करता था। इसमे भैसा या बैल जोड़ी फांद दिया जाता हैं। आज के समय में भी ग्रामीण अंचलों मे यातायात का प्रमुख साधन हैं। इसका उपयोग प्रमुख कृषि कार्य भारी समान लाने-लेजाने के अलावा लंबी सफर, तीर्थ यात्रा, व्यापार, शादी ब्याह में बारात जाने में भी गाड़ा का उपयोग किया जाता हैं। संजोही कक्ष के बाहर मैदान में गाड़ा के सुंदर स्वरुप को देखा जा सकता हैं। छत्तीसगढ़ के ग्रामीण जनजीवन को शहरी चश्मे से देखें तो बड़ा ही कठिन और श्रम साध्य जान पड़ता है, किन्तु ग्रामीणों का सीधा सादा जीवन शैली बहुत कुछ सीख दे जाता है जहाँ प्रकृति के संरक्षण में उनके योगदान का कोई मुकाबला नही है। घर में टंगे धान छिपारी, गरुड़ फल, गोबर से लीपा हुआ घर आंगन हुई से खुटियाया हुआ दीवाल का निचला किनारा, मनोरंजन के लिए इमली बीज या कौड़ी का खेल पचिसा, लकड़ी का भटकौला, गिल्ली-डंडा का खेल आज के कंप्यूटर युग को दरकिनार करता ग्रामीण अन्चलों में उतना ही ज्यादा समृद्ध और लोकप्रिय है. संजोही की परिकल्पना से ही मन गदगद हो उठता है। संजोही में ग्रामीण जनजीवन के साजो समान जैसे-जैसे जुड़ते चले जा रहे हैं, उत्साह उतना ही बढ़ता चला जा रहा है। संजोही में शेष अभी बहुत कुछ जुड़ना बाकी है। संजोही का उद्देश्य काफी बड़ा है क्योंकि छत्तीसगढ़ प्रदेश के ग्रामीण जनजीवन की बात करें तो जिला, संभाग और चारों दिशाओं को घुम कर देखा जाए काफी अंतर नजर आयेगा. बोलचाल, रहन सहन, पहनावा ओढावा, खानपान, तीज त्योहार, और समूचे छत्तीसगढ़ के कला संस्कृति को विश्वविद्यालय के संजोही कक्ष यानि लोक कला केंद्र शोध सृजन पीठ में समाहित कर पाना कठिन जरुर हैं, पर असंभव बिल्कुल भी नहीं हैं उस पूर्णतः को जल्द ही हासिल कर ही लेंगे।

Dr. C.V. Raman University
Registrar
Kargi Road, Kota, Bilaspur (C.G.)

संजोही कक्ष में प्रदर्शित समानों के संदर्भ में

धान छिपारी या दियारी इसे केंवट, कृषक और ग्रामीण महिलाएं नये धान की बाली को करीने से गूंथ कर अलग अलग आकार प्रकार में सुंदर और आकर्षक स्वरुप प्रदान करती है, इसे लक्ष्मी पूजा, अगहन गुरुवारी पूजा के दौरान घर के मुख्य द्वार छत्त या आंगन में लटका दिया जाता है। यह सुख समृद्धि का प्रतिक होने के साथ साथ चिड़ियों की रक्षा के लिए महत्वपूर्ण माना जाता है।

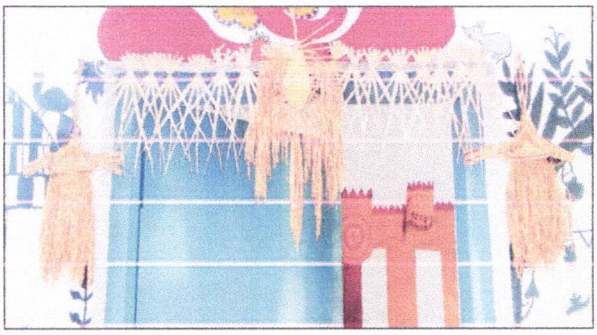

छोटी सुपेली बाँस, छिँद पेड़ की पत्तियों से बना होता है बँसोड़ जाति के लोग इसे तैयार करते हैं। ब्याह के मौके पर इसका उपयोग लाइ भरकर किया जाता है। जो सुख समृद्धि और सुरक्षा का प्रतीक है।

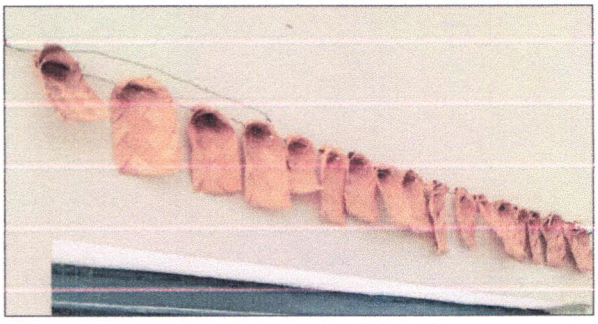

मथानी खइलर इसे कारपेंटर बढ़ाई लोग बनाते है, दही दाल और अन्य तरल पदार्थो को मथा जाता है यह लकड़ी का बना होता है।

कुरेड़ी इसे प्रजापति कुम्हार जाति के लोग बनाते है दूध-गरम करने दही जमाने में इसका उपयोग किया जाता है मिट्टी का बना होता है।

Dr. C.V. Raman University
Registrar
Kargi Road, Kota, Bilaspur (C.G.)

करहैया (कढ़ाही) कुम्हार (प्रजापति) जाति के लोग इसे बनाते है, इसका उपयोग साग तरकारी बनाने में किया जाता है मिट्टी का बना होता है।

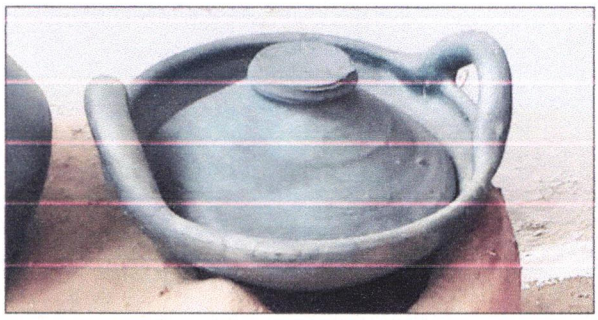

तेलाई इसे कुम्हार प्रजापति जाति के लोग बनाते है इसका उपयोग साग पकवान बनाने के अलावा सुख दुख रस्म अदायगी में किया जाता है यह मिट्टी का बना होता है। इसमें तेल से छानने का कार्य विशेष रुप से किया जाता है।

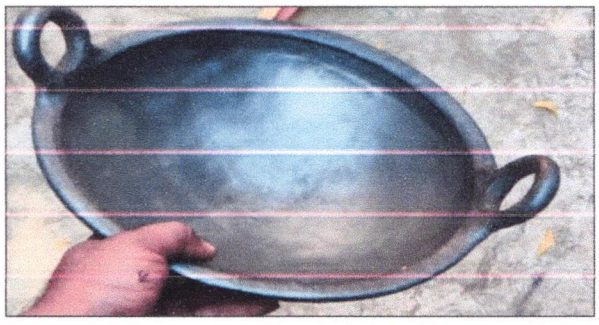

तुमड़ी यह लौकी के मटके नुमा फल को सूखाकर तैयार किया जाता है, यह पानी रखने खाद्य पदार्थ रखने आदि के काम में आता है। यह एक प्रकार का प्राकृतिक जल पात्र है।

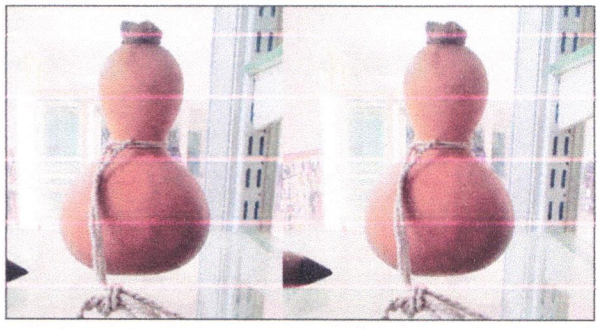

मरसा यह मिट्टी या चीनी मिट्टी का बना होता है, मटके के ऊपर मिट्टी एवं गोबर का लेप लगा देते हैं। इसका उपयोग पकवानों (आचार, गुड़, तेल) आदि को लंबे समय तक संरक्षित रखने में होता है।

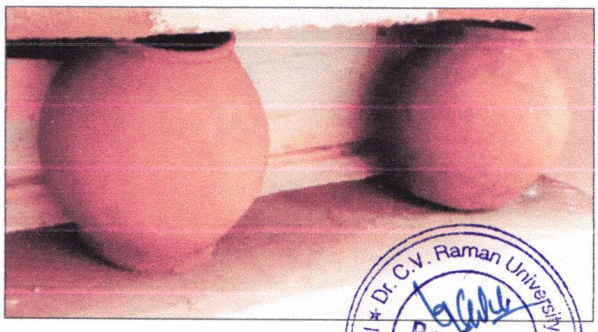

Dr. C.V. Raman University
Registrar
Kargi Road, Kota, Bilaspur (C.G.)

पराई ढक्कन, प्लेट इसे कुम्हार प्रजापति जाति के लोग बनाते है इसका उपयोग खाद्य पदार्थो को ढाँक कर सुरक्षित रखा जाता है। कभी- कभी टोटका उतारने में भी इसका प्रयोग ग्रामीण करते हैं। यह मिट्टी का बना होता है।

मरकी बड़ा (मटका) इसे कुम्हार (प्रजापति) जाति के लोग बनाते हैं। इसका उपयोग आचार दाल चावल बड़ी बिजौरी पापड़ को लंबे समय तक सुरक्षित रखने के लिए किया जाता है, साथ ही भोजन पकाने के उपयोग में आता है। यह मिट्टी का बना होता है।

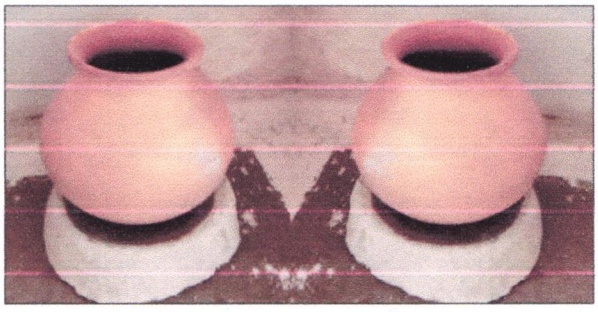

बटकी इसे कुम्हार प्राजापति जाति के लोग बनाते हैं खाद्य पदार्थ रखने और भोजन के पात्र के रुप में भी इसका उपयोग होता है। यह धातु और मिट्टी दोनों का बना होता है बटकी में बासी चटनी में नून इस बर्तन में रात के बचे चांवल (बासी) को पानी में डालकर खाया जाता है इसके अलावा बटकी का उपयोग खाद्य पदार्थ तैयार करने में किया जाता है।

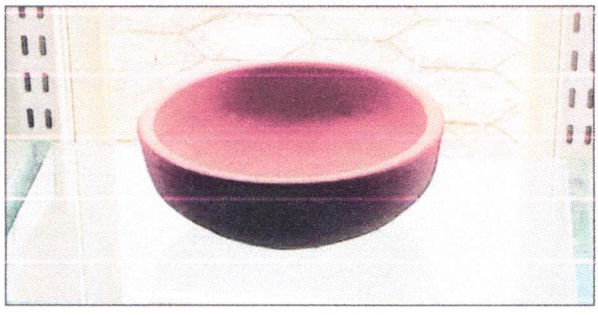

चुकिया मिट्टी का बना होता है कुम्हार प्रजापति जाति के लोग इसे बनाते हैं। बच्चों के खिलौने और धार्मिक अनुष्ठान में काम आता है।

दिया मिट्टी का होता है धार्मिक पूजा अनुष्ठान और दीपावली पर्व के अवसर पर मिट्टी के दीपक जला कर लक्ष्मी जी की पूजा आराधना की जाती है। हिंदू धर्म में मिट्टी के दीए को तुलसी चौरा में दीप प्राजव्वलित करने की परंपरा काफी प्राचीन है। प्राजापति जाति के लोग इसे तैयार करते है।

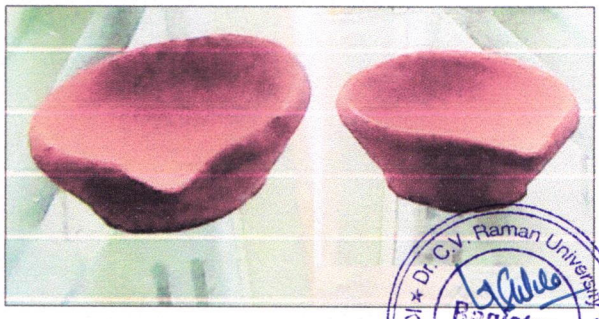

Dr. C.V. Raman University
Registrar

कलश-करवा मिट्टी को पका कर तैयार किया जाता है। कुम्हार (प्रजापति) जाति के लोग चाक के माध्यम से इसका निर्माण करते हैं। वर वधु विवाह के अवसर पर मंडप के नीचे कलश में दीपक जला कर रखा जाता है। मिट्टी की छोटे घड़े को सजाकर ।

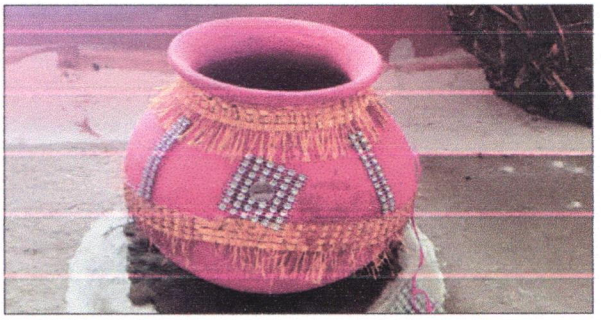

दौरी यह कागज या बांस से दो तरह से बनता है। बांस के पतले कांडी और चौड़ी पत्ती से बना होता है। वैसवार बंसोड़ जाति के लोग इसे तैयार करते हैं दाल-चांवल की सफाई साग भाजी और पकवान रखने के काम में आता है। यह बारिक सामान आटा आदि रखने के काम में आता है।

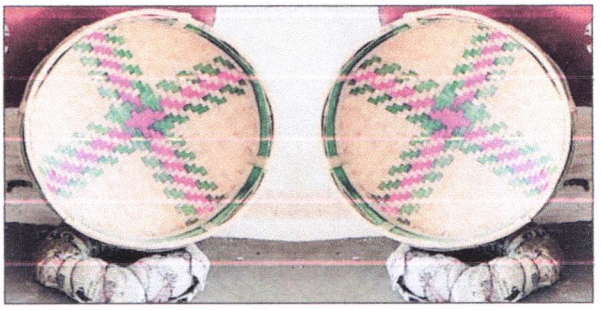

झांपी (बड़ी बेलना कार टोकरी) विवाह की झांपी बांस के कांड़ी और पतली पत्तियों से बना होता है और बंसोड़ जाति के लोग इसे तैयार करते हैं। झांपी के माध्यम से बेटी बिदाई के अवसर पर पकवानों से भरी झांपी वर पक्ष को उपहार में दिया जाता है। छोटी झांपी में पकवान फल-फूल भर कर रख दिया जाता है तथा यह महिलाओं को लॉकर जैसा उपयोग होता है।

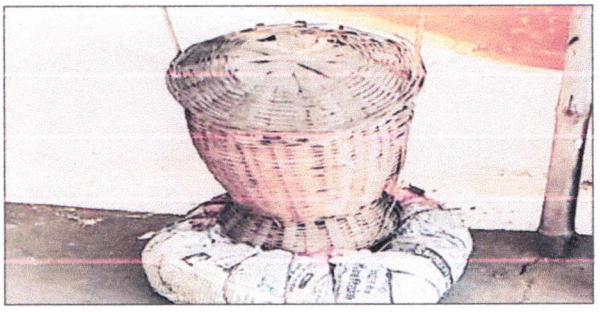

झाऊहा (मजबूत टोकरी) इसे बंसोड़, कंडरा, बीरहोर, कमार, धनवार जाति के लोग बनाते हैं। इसकी सहायता से भारी और वजनी समानों को रखा जाता है। यह बांस के मोटे कांड़ी से बना होता है।

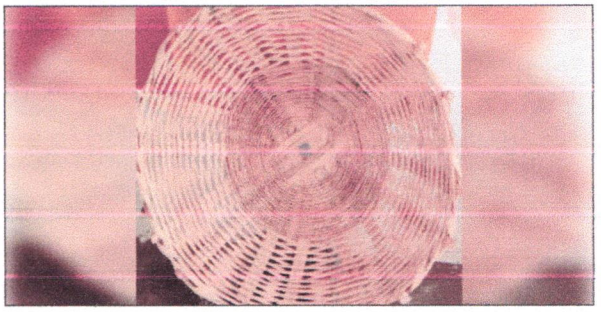

कांवर - सींका बांस के लचीले दार कमानी से बने कांवर वजनी समान उठाने के काम में आता हैं, जैसे - धान का गठ्ठा, झापि, पानी का हउला, लकड़ी का गठ्ठा, झाऊहा में रखे समान। इसके दोनों छोर पर जूट की रस्सी से बने सीका लगा रहता है जिसमें टोकनी सामान रखा जाता है।

Dr. C.V. Raman University ★ Kargi ★ (C.G.) Registrar

पर्रा बसोड़ जाति के लोग नए बांस को काट छीलकर पतली पट्टी को आपस में करिने से गूंथ कर गोल पर्रा तैयार करते हैं। यह दैनिक कामकाज के अलावा हिंदू धर्म के मांगलिक कार्यो का प्रमुख हिस्सा होता है। इसके अलावा ग्रामीण महिलाएं बड़ी-बिजौरी, पापड़, दही-मिर्च, साग-भाजी को धूप में सुखाकर रसोई मे वर्षो तक स्टोर रखते हैं।

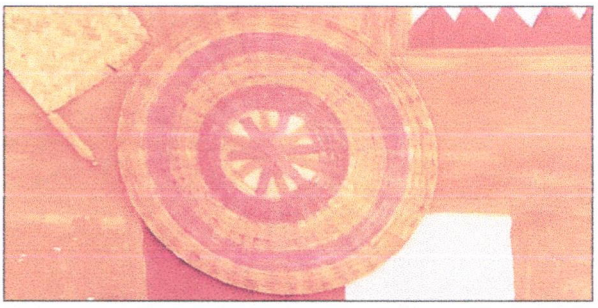

सुपा बँसोड जाति के लोग बांस को छीलकर बड़े ही कलात्मक ढंग से सुपा तैयार करते हैं। हिंदू धर्म में सुपा को लक्ष्मी की तरह मान दिया जाता है। मांगलिक अवसर पर सुपा को समृद्धि का सूचक मानते हैं। जो अनाज साफ करने का प्रमुख संसाधन है। ग्रामीण अंचल में सुपा वस्तु विनिमय का बेहतर मध्यम होता है। इसका उपयोग वस्तु मापक की तरह भी किया जाता है।

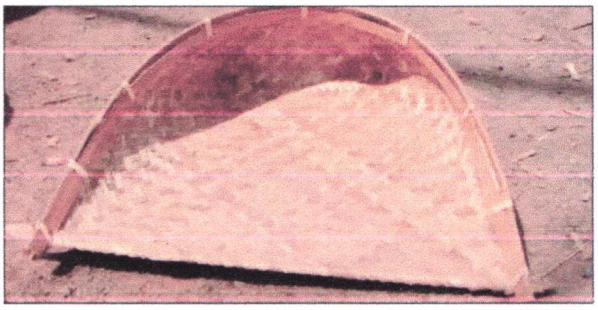

फरी रावत नाच को शौर्य का प्रतिक माना जाता हैं जिसमे यदुवंशियों का सवंगा वीर योद्धा की भाँति होता हैं. सिर में पगड़ी हाँथ में लाठी और ढाल नुमा लोहे का फरी होता हैं इस माध्यम से लाठी के प्रहार को रोका जाता हैं. रावत नाच के दौरान लाठी चाल का प्रदर्शन किया जाता हैं तब फरी का प्रयोग देखते ही बनता हैं।

बहरी खरहरा झाड़ू इसे बँसोड़ जाति के लोग तैयार करते हैं, जो महाराष्ट्र के घुमंतू परिवार जो कि छत्तीसगढ़ में विथापित हो चुके हैं। जंगली खरपतवार फूल कांस के घास से बना होता है, जिसे फूल बहरी कहा जाता है। छिंद के पत्तियों से छिंद झाड़ू बनता है, बांस के पतले कांड़ी से खरहरा बनाया जाता है। झाड़ू को ग्रामीण अंचल में लक्ष्मी और समृद्धि की प्रतीक माना जाता है। विविध कार्यो हेतु अलग-अलग प्रकार का झाड़ू उपयोग में लाया जाता है।

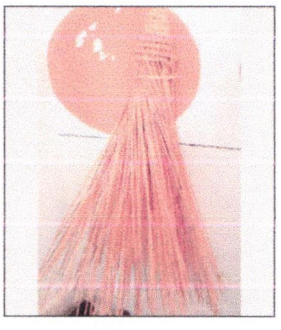

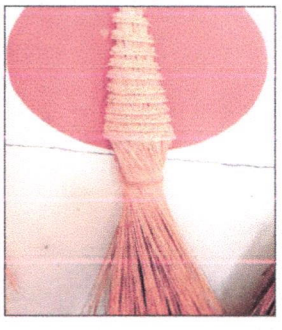

Dr. C.V. Raman University
Registrar
Kargi Road, Kota

खुमरी ग्रामीणों का छाता भी कहा जाता है। इसे बैसोड, कडरा, बिरहोर कुमार, धनवार जाति के लोग बनाते है। यह इनके रोजगार और आजीविका का प्रमुख साधन है। धूप और बारिश से बचाव करने यह मजबूत आधार है। ओले आधी-तूफान का इस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। यह बांस के चौड़े-पतले कांडी से बना होता है.। इसे पहनकर धूप पानी में बाहर निकल जाते हैं।

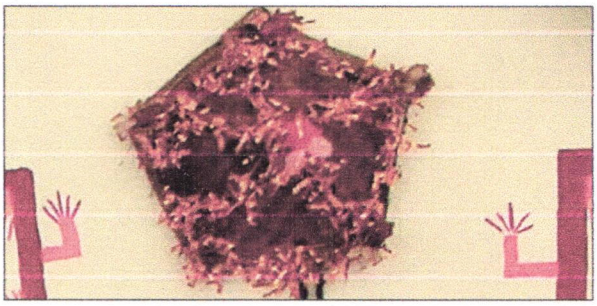

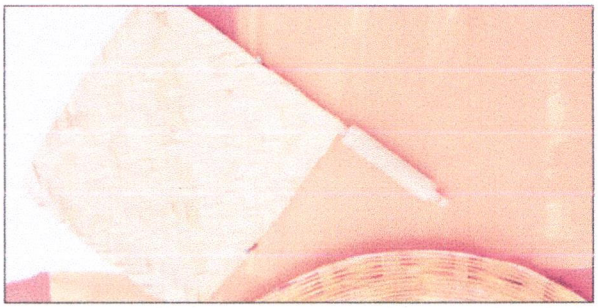

हाथ पंखा बांस के चौड़े पट्टी और पतली बाँस से मिलकर बना होता है बैसवार धुलिया जाति के लोग इसे तैयार करते हैं, हवा धौकने के काम मे आता है साथ ही मांगलिक कार्यो में इसका विशेष महत्व है।

आंट ढेरा रस्सी बनाने का यंत्र लकड़ी की डंडी और लोहे के तार से बना होता है बढ़ाई इसे तैयार करता है। यह कपास, नारियल, जूट, पैरा और कई प्रकार के कृषि उत्पाद से रस्सी बनाने के काम में आता है।

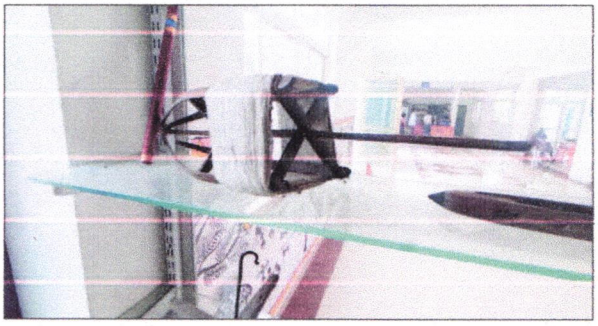

नरीअंसारी बांस का बना होता है इसे बढ़ाई तैयार करता है जुलाहे, कोस्टा, देवांगन, बुनकर जाति के लोग इससे सूत कात कर कपड़ा तैयार करते हैं।

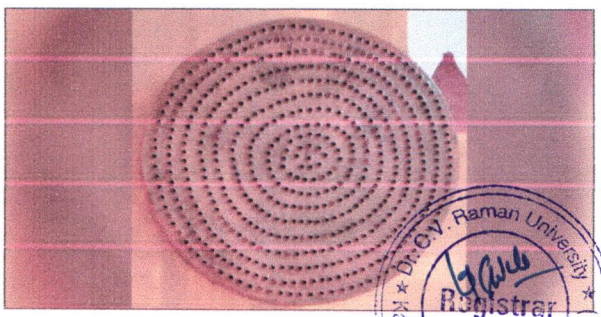

चलनी इसे ग्रामीण अंचल में लोहार जाति द्वारा तैयार करता है। इसकी सहायता से अनाज साफ किया जाता है, यह टिन के पतले चादर का बना होता है। इसके चारों तरफ बारिक पतले छेद होते हैं।

Dr. C.V. Raman University
Registrar
Kargi Road, Kota, Bilaspur (C.G.)

ढेंकी इसे ग्रामीण अंचल में बढ़ाई द्वारा तैयार किया जाता है। इसमें प्रमुख रुप से बबूल, पलाश, इमली आदि के सूखी लकड़ियों से तैयार किया जाता है। इसमें सामने की ओर मुसल लगा होता है। ढेंकी में धान और गेहूं को कूटकर उसका छिलका अलग कर अनाज को खाने योग्य तैयार किया जाता है। इसे अनाज का छरना बोलते हैं।

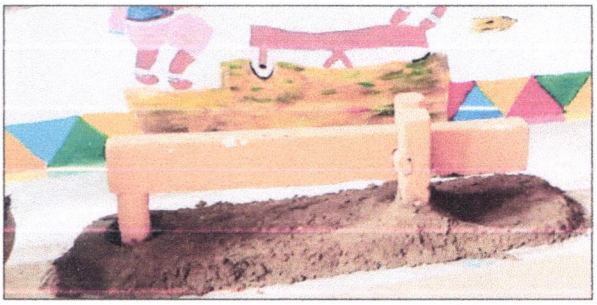

जतवा (आटा चक्की) आटा तैयार करने का यंत्र पत्थर तराशने वाले कारीगर विशेष पत्थर का चुनाव करने के बाद जतवा को आकार देते हैं, जतवा में दाल को अलग कर दाल बनाया जाता है, इसे दरना बोलते हैं। साथ ही दाल, चांवल, गेंहू को बारीक पीसकर बारीक आटा तैयार किया जाता हैं।

गोरसी (ग्रामीण हीटर) यह मिट्टी का बना होता है। वैसे तो इसे कुम्हार तैयार करता है। किन्तु आवश्यकता की वस्तु होने के कारण प्रत्येक ग्रामीण बड़ी आसानी तैयार कर लेते हैं। ग्रामीणों के लिए यह बहुउपयोगी होता है। खाद्य पदार्थो को गर्म करने, कमरे को गर्म रखने नवजात बच्चों की सिकाई करने उपयोग किया जाता है। वही जाड़े में ठंड से बचने गोरसी के आसपास लोगो की भीड़ उमड़ पड़ती है। अनाज सब्जी घूमने एवं विशेष प्रकार की रोटी बनाने में इसका विशेष उपयोग होता है।

कंडिल, चिमनी यह लोहे से बना होता हैं। इसका दूसरा स्वरुप चिमनी होता है, जिसे गाँव का लोहार तैयार करता है। इसकी सहायता से घर को रोशन किया जाता है साथ ही यह टिन, पतले तार, सूती की बाती और कांच से मिल कर बना होता है। मिट्टी तेल से इसमें रोशनी की जाती है।

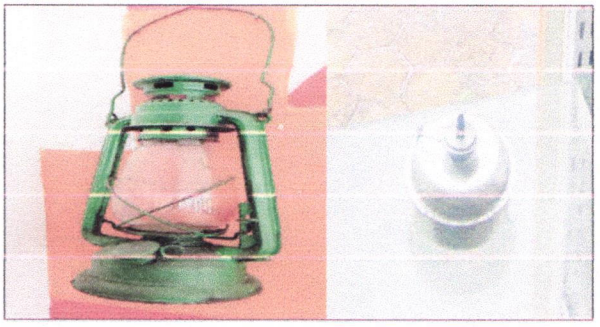

गुलेल (पत्थर या मिट्टी की गोली से दूर तक मारक यंत्र) पेड़ के दो जुड़े शाखाओं को काटकर बनाया जाता है। मोची या बढ़ाई इसे तैयार करते हैं। दो शाखा के सिरे पर पतली किन्तु मजबूत रबड़ लगा होता है जिसमे पत्थर की गोटी से निशानेबाजी और छोटे जानवर पक्षी पक्षियों के शिकार करने का काम आता है।

Dr. C.V. Raman University
Registrar

पठेरा (छोटी अलमीरा) छोटी अलमीरा को ग्रामीण अंचलों में पटेरा कहा जाता है, जिसमें छोटी मोटी वस्तुओं की संभाल कर रखा जाता है। ड्रेसिंग टेबल की तरह इसका उपयोग ग्रामीण करते हैं, इसके अलावा इसमें दिया रख कर घर आंगन को दूर तक रोशन किया जाता है।

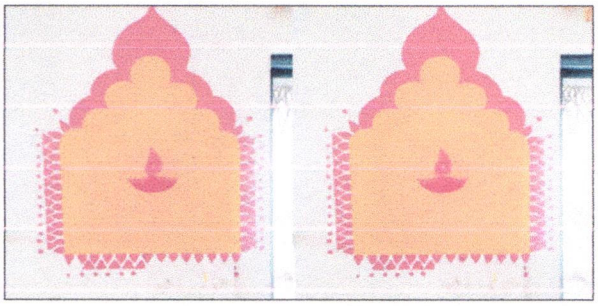

माईमौरी मानभरे (भित्ति चित्र) घर की वरिष्ठ महिला इसे बनाती है, यह मंगल शुभता का प्रतिक चिन्ह है। शादी ब्याह और मांगलिक अवसरों पर देवी देवताओं और पुरखों को आमंत्रित करने का माध्यम होता है, दीवाल पर विभिन्न चटक रंगो से बनाया जाता है। जिसकी विवाह और विशेष अवसरों पर पूजा होती है।

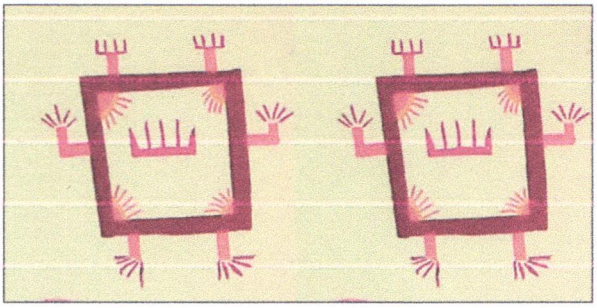

मौर छिँद के पत्तों से बना होता है। बँसोड़ जाति के लोग इसे तैयार करते हैं। विवाह के अवसर पर वर-वधू और मिट्टी की छोटी हांडी के सिर पर इसे बांधा जाता है। जो शुभदा स्मृद्धि और सुरक्षा का प्रतीक है। इसे पगड़ी में भी ऊपर सजाया जाता है।

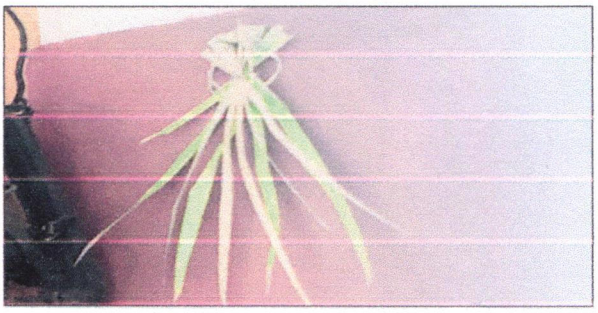

नाग देवता (भित्ति चित्र) नाग देवता के चित्र को घर की वरिष्ठ महिला तैयार करती हैं गाय के गोबर कपास हल्दी सिंदूर की सहायता से नागपंचमी की सुबह घर के मुख्य दीवार, देव स्थान या रसोई घर के दीवार में उकेरती है। इसका उपयोग नाग देवता की पूजा आराधना करने के लिए किया जाता है।

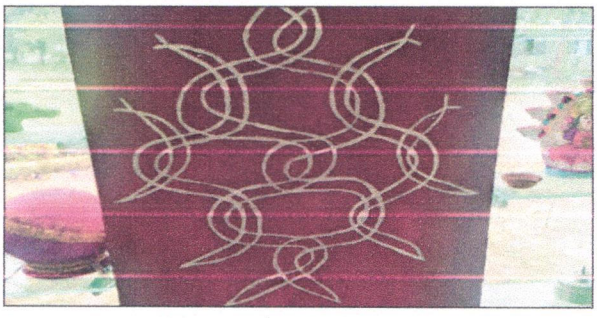

गरुड़ फल यह गरुड़ के पेड़ का सुखा फल होता हैं. ग्रामीण अंचलों के घर आगन और मवेशी रखने के स्थान पर दीवालों में टंगा होता है, जहरीले जीव जन्तु गरुड़ फल के प्रभाव से दूर रहते है, ऐसी मान्यता है। दाना देने के लिए उपयोग में लाया जाता है।

Dr. C.V. Raman University
Registrar
Kargi Road, Kota, Bilaspur (C.G.)

चकिया या मिठू चक्का इसे कारपेंटर, बढ़ई अपने औजारों की सहायता से बड़े ही कलात्मक अंदाज में बनाता है बच्चों के उम्र के हिसाब से यह अलग अलग आकार प्रकार का होता है, इसकी सहायता से नन्हे बच्चे चलना सीखते है यह लकड़ी का बना होता है, इसे अलग अलग चटक रंगों में रंगा जाता है।

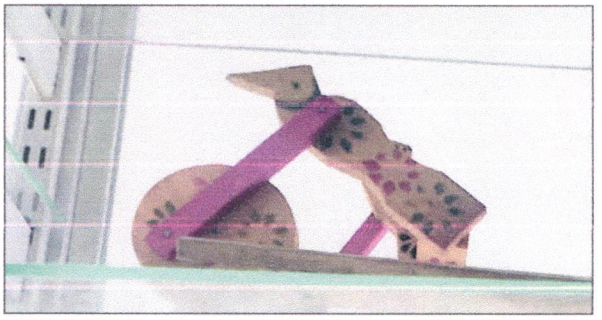

मिट्टी के खिलौने इसे कुम्हार (प्रजापति) जाति के लोग बनाते हैं। इसका उपयोग बच्चे खेलने के लिए करते हैं, इससे उनको घर गृहस्ती का काम सीखने को मिलता है। मनोरंजन का साधन है।

नन्दी बइला जतवा, और मिट्टी के बर्तन (खिलौना) कुम्हार (प्रजापति) जाति के लोग इसे बनाते है, पोला त्योहार में बच्चों को खिलौने के रुप में मिट्टी का बना नन्दी बैल उपहार में दिया जाता है ताकि बच्चे कृषि कार्य और पशु पालन में रुचि ले सके वही बच्चियों को गृहकार्य में दक्षता हासिल करने मिट्टी के बर्तन (खिलौना) भेंट किया जाता है। पोला के दिन इनकी विशेष पूजा की जाती है।

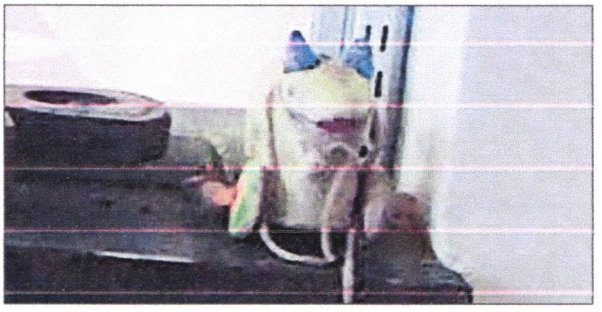

सुहाई (सोहना काउबेल्ट) यादव समाज के लोग तैयार करते हैं। सुहाई पलास के जड़, मोर पंख और ऊन के चटक रंग के फूल की तरह गुच्छे से बना होता है। दिखने में काफी के आकर्षक होता है, पशुधन की रक्षा के लिए दीपावली पर्व पर मवेशी के गले में इसे बांधा जाता है। यदुवंशी चरवाहा अपने जजमानों के घर जाकर पशुओं के गले में सुहाई बांधकर दक्षिणा प्राप्त करता है।

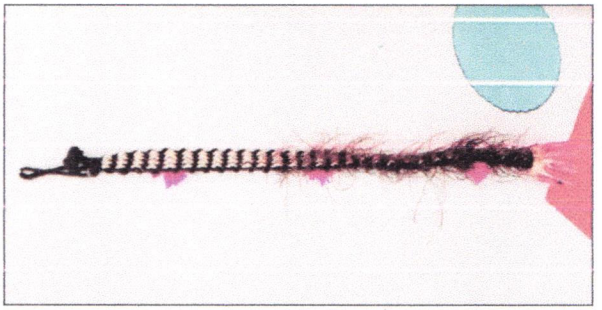

नोई इसे चरवाहा या यदुवंशी समाज के लोग बनाते हैं, यह मवेशी के पूछ के बाल से बना होता है, इसका उपयोग बिगडैल मवेशी को काबू करने और गाय-भैस के पिछले टोगों को बांध कर दूध दुहने के काम में आता है। दूध निकालते समय बछड़े को बांधने के काम में आता है।

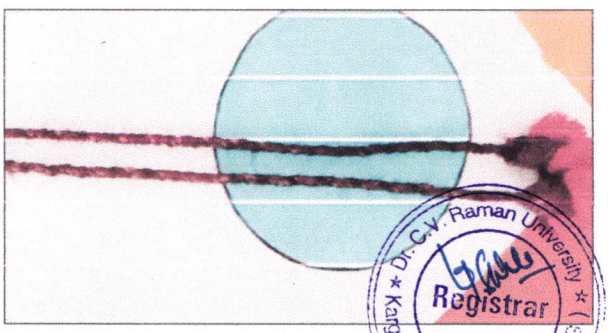

Dr. C.V. Raman University
Registrar
Kargi Road, Kota, Bilaspur (C.G.)

रस्सी

(अ) नहना - यह गाय के चमड़े से बनाया जाता है, इसकी लंबाई 9 हाथ की होती है। इसका उपयोग हल या बैलगाड़ी में बैलों को जुवाड़ा बांधने के लिए उपयोग में लाया जाता है।

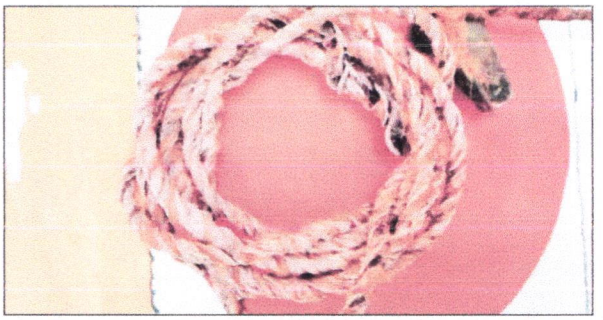

(ब) बरही - यह गाय के चमड़े से स्थानीय चर्मकारों द्वारा तैयार किया जाता है। इसकी लंबाई 12 हाथ की होती है इसका उपयोग बैलगाड़ी में जुवाड़ा बांधने के काम में आता है।

(स) बांत - यह विशेष प्रकार के घांस से बनाई जाती है, जिसका उपयोग खांट, बैठने की कुर्सी एवं विशेष कर मृतक कार्यों में मयाना बांधने के कार्य में प्रयोग किया जाता है।

(द) डोर - यह जूट की मोटी रस्सी है, इसे जूट (पटसन) के छिलके से स्थानीय किसान अपने कृषि कार्यों हेतु तैयार करता है। इससे पशुओं को बांधने के लिए (गेरुवा) आदि तैयार किया जाता है।

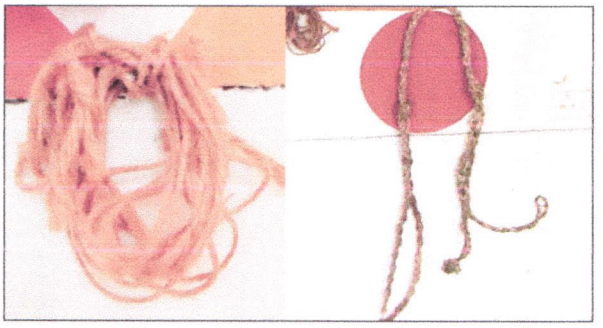

(इ) पैराडोरी - यह धान के लंबे पराली से तैयार किया जाता है, समानता इसकी लंबाई 6 से 7 फीट की होती है। इसका विशेष उपयोग कृषि कार्यों में उत्पादों के बंडल बनाने में किया जाता है।

Dr. C.V. Raman University
Registrar
Kargi Road, Kota

हाथो में पहनी जानी वाली आभूषण

नागमोरी यह चांदी का बना आभूषण है। जिसे दोनों हाथो के बाहो पर पहना जाता है। इसकी बनावट सर्पाकार होती है, जिसके कारण इसे नागमोरी कहते है।

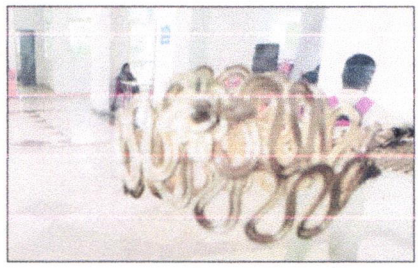

पटा चांदी निर्मित पटा सादगी सरलता व सीधेपन का प्रतीक है । इसे चूड़ियों के बीच बीच में पहना जाता है, यह एकमात्र ऐसा गहना है जिसका परित्याग महिलाएं विधवा होने के बाद भी नहीं करती । इसे सादगी का प्रतिक माना जाता है।

ककनी इसे चूड़ियो के साथ हाथो में पहना जाता है। जो दिखने में नुकूली होती है। पहुंची, मुंदरी, बहुँटा, चुरी भी हाथ में पहने जाने वाली आभूषण है।

पैरो में पहनी जानी वाली आभूषण

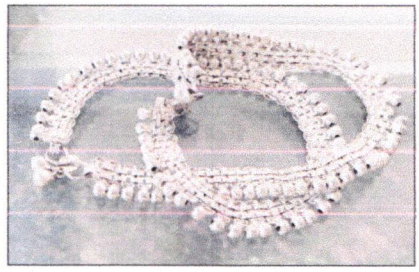

लच्छा यह पैर में पहने जानी वाली आभूषण है, जिसे हम आम भाषा में पायल कहते है। इसे प्रायः चांदी से बनाया जाता है।

टोडा चांदी निर्मित पाव में पहने जाने वाला या गहना करीब 10 से 20 तोले तक का होता है। यह काफी मोटा व वजनदार तथा विभिन्न डिजाइनों का होता है। एक जमाने में भारी से भारी टोडा पहनना महिलाएं अपनी शान और आन समझती थीं। जो महिला जितना वजनदार तोड़ा पहनती थी, उसे उतना ही संपन्न समझा जाता है।

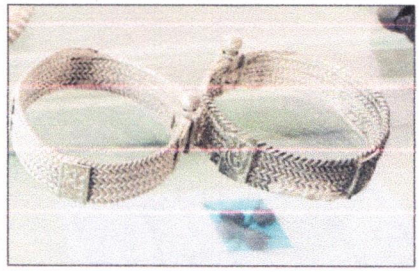

बिछिया पांव की उंगलियों में पहना जाने वाला तथा चांदी से बना कहना बिछिया है। ग्रामीण महिलाएं शादी होने के बाद बिछिया पहनती हैं। बिछिया का प्रचलन शहरी महिलाओं के बीच भी है। प्रायः विवाह होने के बाद लगभग हर महिलाये इसे पहनती है।

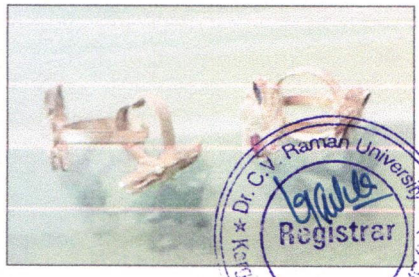

Dr. C.V. Raman University
Registrar
Kargi Road, Kota, Bilaspur (C.G.)

गले में पहनने वाला आभूषण

सुता को गला में पहना जाता है। यह चांदी का बना होता है। पुतरी की तरह सुता भी चांदी का गहना है आमतौर पर यह मध्यमा उंगली की मोटाई जितना गोलाकार होता है। इसे गले में पहना जाता है यह अन्य गहनों की अपेक्षा भारी होता है।

सुर्रा लाख के ऊपर सोने की परत चढ़ा कर सुर्रा बनाया जाता है। इसकी आकृति गोल होती है तथा इसे भी गले में पहना जाता है। इसकी बनावट इतनी आकर्षक होती है जैसे कि गले के संदर्भ में चार चांद लग गए हों ।

कमर में पहने जानी वाली आभूषण

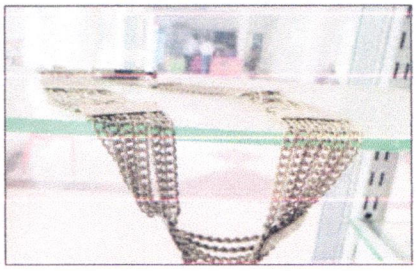

करधन कमर में पहना जाने वाला यह बेहद मनमोहक गहना है। मानो कमर में धन रखा हो और शायद इसलिए इसे करधन कहा जाता है। इसे ग्रामीण ही नहीं, शहरी महिलाएं भी धारण करती हैं। चांदी से बनी एक लड़ी से लेकर कड़ियों तक का करधन ज्यादा पसंद करती हैं। वजनदार करधन वैभव का प्रतीक है।

कान में पहने जानी वाली आभूषण

ढार सोने से बनाया गया बड़े आकार का गहना ढार कहलाता है। इसे कानों में पहना जाता है। कानों में पहने जाने वाले दूसरे गहनों की तुलना में यह ज्यादा भारी होता है। इसकी बनावट ऐसी होती है, कि पूरा कान ढक जाता है। यह चांदी का भी होता है।

खिनवा इसे कान में पहना जाता है। झुमका प्रायः सोने और चाँदी का बना होता है।
गजरा, बेनीफुल, टिकली, गोदना, मांगमोती आदि भी कान में पहने जाने वाली आभूषण है।

Dr. C.V. Raman University
Registrar

पुतरी का अर्थ होता है गुड़िया यानी की पुतरी पहनकर महिलाएं गुड़िया के समान दर्शनीय होती हैं 1 रु. के सिक्के के कुछ बड़े कार के 10-12 सिक्कों को एक मोटे धागे में खास तरीके से गोता जाता है यह सिक्के प्राचीन समय में चांदी से बनाए जाते थे लेकिन कालांतर में चांदी का स्थान अन्य धातुओं में ले लिया । इन सिक्कों पर विशेष प्रकार के चिन्ह अंकित होते हैं जिन्हें ठप्प कहा जाता है ।

ऐंठी कंगन की तरह कलाइयों में पहने जाने वाला तथा चांदी से बना हुआ गहना ऐंठी है । ऐंठी शब्द ऐंठने से बना है जिसका अर्थ है गूथना । दो धागों को आपस में मिलाकर ऐंठने (गूथने) से जैसी आकृति बनती है, वैसी ही आकृति इसकी भी होती है । चांदी की ऐंठन बड़ी कलात्मक व आकर्षक होती है । छत्तीसगढ़ की ग्रामीण महिलाएं कांच की चूड़ियों के समान ऐंठी जरूर पहनती हैं जिसकी कलात्मकता बड़े से बड़े कलाकार को भी हत द कर देती है । ऐंठी को स्त्री के सुख समृद्धि के प्रतीक के रुप में देखा जाता है ।

Registrar

CVRU

विद्या परं देवतम्

DR. C.V.RAMAN UNIVERSITY

डॉ. सी. वी. रामन् विश्वविद्यालय

करगी रोड, कोटा, जिला- बिलासपुर (छ.ग.)

Dr. C.V. Raman University
Registrar
Kargi Road, Kota, Bilaspur (C.G.)